दस्तक देती लाईनें

रचयिता

कवि हृदय सिद्धान्तज्ञ आचार्य विनम्रसागर

1

कृति

दस्तक देती लाईनें

शुभाशीष :– जैनाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज

रचयिता

प्रखर वक्ता आचार्य विनम्रसागर

2007 प्रथमावृत्ति : 2200 प्रति जयपुर
2016 द्वितीयावृत्ति : 2000 प्रति फिरोजाबाद

प्राप्ति स्थान :
सम्यग्ज्ञान विराग विद्यापीठ, भिण्ड
देवेन्द्र जैन, बड़ी बजरिया, बीना ((07580-223344)
सीपुर समता तीर्थ धाम, सीपुर, 9828613614

कम्प्यूटर डिजाइन एवं मुद्रक – मुकेश जैन 9414555103

आर्यन् एजेन्सीज्
इन्दिरा बाजार, अजमेरी गेट, जयपुर (राज.)

(सर्वाधिकार सुरक्षित)

पुनः प्रकाशन हेतु व्यवस्था राशि – 15/-रु.मात्र

2

हमारी नजर में अनूठा व्यक्तित्व

आचार्य श्री विनम्रसागरजी महाराज का

प्रखर बुद्धि व श्रेष्ठ प्रतिभा के धनी परम पूज्य **आचार्य श्री विनम्रसागर जी** महाराज ने जन्म से ही प्रतिभा को अभिव्यक्त किया 5 वर्ष की उम्र में आप तीसरी क्लास में पढ़ते थे। पढ़ने में हमेशा अव्वल रहे मात्र 20 वर्ष की उम्र में (1984 में) आपकी एक विद्यालय में गवर्मेण्ट सर्विस लग गई थी 1986 में आपने एम.कॉम. जिला टॉप (दो विषय में विशेष योग्यता) प्राप्त करके प्रोफेसर पद के लिए तैयारी कर ली थी लेकिन एम.कॉम करने के बाद वही हुआ जो पुरुषार्थ लिखता है विधि ने वैराग्य की ओर मोड़ दिया और फिर विरक्त होकर सर्विस की तथा 8 अगस्त 1992 को सर्विस त्याग कर दी और 9 अगस्त 1992 को ऐलक बन गये तथा 8 जून 2003 को ललितपुर में मुनि दीक्षा प्राप्त की तथा 12 दिसम्बर 2010 में स्वगुरु के हस्तकमल से आचार्य पद पर सुशोभित हुए।

आचार्यश्री ने चारों अनुयोगों का विशेष अध्ययन किया आपके पिताजी प्रकाण्ड विद्वान थे उन्होंने भी मुनि दीक्षा प्राप्त करके सन् 2002 में बीना (म.प्र.) में समाधि प्राप्त की। विशेषता ये कि अपने पिता की समाधि उन्हीं के पुत्र आचार्यश्री ने कराई। **न्यायशास्त्र, नयशास्त्र, आध्यात्मिक शास्त्र व सिद्धान्त ग्रंथों का गुरुमुख से अध्ययन** करके हर बात पर मंथन किया। आचार्यश्री जैसी विचक्षण कला वर्तमान में किसी विरले ही साधु में देखने को मिलती है वह है काव्य शैली की कला हर काव्य पर लिखने का अधिकार रखने वाले धर्म की बात को व्यक्ति के

3

जेहन में उतार देते हैं आचार्य श्री की आवाज में ही संगीत निकलता है सभी आगम के ज्ञान के साथ काव्यकला होते हुए श्रेष्ठ प्रवचन शैली एवं निर्दोष चर्या का पालन आचार्यश्री का आकर्षक चुम्बकीय व्यक्तित्व है।

"जहाँ न पहुँचे रवि वहाँ पहुँचे कवि" लेकिन आचार्यश्री की बात है **"जहाँ न पहुँचे कवि वहाँ पहुँचे अनुभवी"** हर बात को अनुभव की कसौटी पर परखकर स्वीकार करने वाले हमेशा आगम की बात को ही श्रद्धान करने वाले, जिनकी भाषा शैली विवादों से रहित, पंथों से दूर केवल वीतरागी और निर्ग्रन्थ भाषा को बोलने वाले, जैन धर्म के मूलग्रंथ श्री धवलाजी, जय धवलाजी, महाधवलाजी का गुरुमुख से अध्ययन करने वाले करणानुयोग पर प्रकाण्ड विद्वत्तता रखने वाले प.पू आचार्यश्री के ऊपर लोगों ने पी.एच.डी. करने को कहा तो आचार्यश्री ने उस समय मना कर दिया क्यूँकि उस समय आचार्यश्री, ऐलक (सन् 1996 में) थे काव्य क्षेत्र में **लगभग 800 कविताएँ, 500 भजन, 300 गज़लें, 2000 मुक्तक, 2000 पहेलियाँ (पद्य में) दस तरह का हिन्दी में भक्तमर, जीवन चलती साँस यहाँ, जीवन जलता दिया यहाँ, गुरू चरणों की धूल यहाँ, जीवन है पानी की बूँद** आदि दस तरह के ऐसे गीतों पर **लगभग 2200 छंद** लिख चुके हैं जो पूरे भारत में प्रसिद्ध हो चुके हैं हर संगीतकार एवं साधु साध्वी जिन्हें गाकर व सुनकर स्वयं को गौरवान्वित महसूस करते हैं एवं सभी स्तुतियों के पद्यानुवाद, कई पूजायें व कई ग्रंथों के पद्यानुवाद किये हैं मुनि श्री ने **णमोकार महामंत्र को अंग्रेजी में** ऐसा लिखा है जिसे णमोकार मंत्र की तरह गाया जाता है एवं उसकी महिमा भी अंग्रेजी में गीत की तरह लिखी है वीतराग स्तोत्र एवं कई भजन भी अंग्रेजी में लिखे एवं 5 पुस्तकें भी अंग्रेजी में लिखी हैं।

4

आचार्यश्री के मामाजी कलेक्टर और प्रोफेसर हैं चाचाजी डॉक्टर और बैंक ऑफिसर है जीजाजी अनुसंधान अधिकारी दिल्ली एवं कई भाई सर्विस में हैं लेकिन आचार्यश्री का पूरा खानदान सोनगढ़ परम्परा का है केवल मुनिश्री के परिवार को छोड़कर।

आचार्यश्री का संस्कृत भाषा पर अच्छा वर्चस्व है शब्द विज्ञान जिन्होंने आत्मसात् किया है हिन्दी-अंग्रेजी, उर्दू, प्राकृत, संस्कृत और ज्योतिष भाषा का ज्ञान रखने वाले गुरुदेव ने कई पुस्तकों को लिखा है आकर्षक शैली वर्तमान परिवेश को प्रभावित करने वाली है। आचार्यश्री से प्रभावित होकर कई लोग दीक्षा ले चुके हैं और कई लोग ब्र.व्रत लेकर साधनारत हैं। आचार्यश्री सभी संघों से मिलकर अपनी विशेष चर्या की और तार्किक एवं मार्मिक ज्ञान की अलग छाप छोड़कर आते हैं। आचार्यश्री का भक्तामर और पूजन शिविर आज भी अद्वितीय बना हुआ है ऐसा भक्तामर शिविर पूर्व में किन्हीं भी साधुओं के द्वारा प्रतिपादित नहीं किया गया। आचार्यश्री को भक्तामर स्तोत्र व जिनेन्द्र पूजन का कोच (विशेषज्ञ) कहा जाता है।

आचार्यश्री के सभी वर्षायोग ऐतिहासिक रहे हैं लेकिन 2016 में फिरोजाबाद का वर्षायोग स्वर्ण अक्षरों से लिखा जाने वाला है उसकी स्मृतियाँ व्यक्ति जीवन भर तक स्मरण करता ही रहेगा आचार्यश्री के भक्तामर शिविर और प्रवचन शैली की अनूठी मिशाल है हमारी समाज उनके चरणों में नममस्तक होती हुई आचार्यश्री के रत्नत्रय की उत्तरोत्तर वृद्धि की शुभकामना करती है और मन वचन काय से त्रिवार नमोऽस्तु करती है।

सकल दिगम्बर जैन समाज
फिरोजाबाद (उ.प्र.)

5

रचयिता की कलम से

काव्य स्रजन की कला बहुत ही श्रेष्ठ कला है ये कला आत्मविभोर कर सकती है ये कला अपनी बात को बड़े मीठे ढ़ंग से बहुत आराम से कह सकती है सबको अपनी ओर आकर्षित कर सकती है कवि काव्य स्रजन में अपने समय का सदुपयोग करता है कविता के विषय को पहले अनुभूत करता है तत्पश्चात् काव्य कला और विद्वत्तता के बल पर उसे शब्दों में गूँथकर छंद बनाता है यह कला God gift कही जाती है ऐसी काव्यस्रजन की शक्ति हमें अपने गुरुदेव प. पू.आचार्य श्री विरागसागरजी महाराज के आशीर्वाद और उनके प्रोत्साहन से प्राप्त हुई।

धार्मिक कविता लिखना, व्यंग्य लिखना, गीत ग़ज़ल लिखना आदि ये सब हमारे आत्मरंजन के साधन बन गये। हमने यह अनुभव किया कि काव्यरस से जीवन में स्वस्थता प्रकट होती है कोई भजन गाने पर आत्मिक शांति स्वयमेव अनुभूत होती है। साधू को काव्यकला हो तो इससे अच्छी और क्या बात हो सकती है क्योंकि उसका मन निरंतर धर्म की बातों को छंदों में गूँथने में लगा रहता है।

हमारा काव्य रचना का ध्येय सिर्फ इतना ही है कि सारे लोग उन रचनाओं को पढ़कर गुनगुनायें और आनंदित होकर अपने जीवन में निर्मलता को प्राप्त कर सफल बनावें। इन कविताओं को बनाने में सारा श्रेय हमारे गुरुवर का है हम तो गुरु की कृपा से शब्दों को गूँथ देते हैं ऐसे श्रद्धेय गुरुवर के चरणों में त्रय भक्तियुत विनम्र नमोऽस्तु-3

Acharya Vinamra Sagar

6

Namokar Mahamantra

I bow to all Arihantas.
I bow to all Siddhas.
I bow to all Acharyas.
I bow to all Upadhyayas.
I bow to all Saints in the world

This Namokar mantra about to destroy all sins.
And the first is auspicious in the all auspicious

Acharya Vinamra Sagar

7

णमोकार महामंत्र

णमो अरिहंताणं
णमो सिद्धाणं
णमो आयरियाणं
णमो उवज्झायाणं
णमो लोए सव्व साहूणं

ऐसो पंच णमोयारो सव्व पावप्पणासणो।
मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवई मंगलं।।

8

नमन वंदन

नमन अरिहंत को मेरा, सभी सिद्धों को अभिवंदन,
सभी आचार्य भगवन को हमारा कोटिशः वंदन ।
उपाध्यायों के गुण गाऊँ मिटें सब दुःख आक्रंदन,
जगत के सर्व ऋषियों को नमन वंदन है अभिनंदन ।।

गलती पर गलती

जो गलती पर करे गलती उसे शैतान कहते हैं,
सुधारे जो यहाँ गलती उसे इंसान कहते है ।
गलत समझे न गलती को उसे हैवान कहते है,
जो गलती छोड़ बैठा हम उसे भगवान कहते है।।

सबमें है खुदा

धरम इंसान को इंसां बना देता है खुद यारो,
मृत्यु के नाम को निर्वाण कर देता है खुद यारो।
करो दिल से सभी को प्रेम सबमें है खुदा यारो,
धरम पत्थर में भी भगवान कर देता यहाँ यारो।।

गुरु हैं भगवन्

मैं रहता जिस्म में हूँ पर जिस्म में जान हैं गुरुवर,
मेरी आवाज है लेकिन सुरीली तान हैं गुरुवर ।
गुरु का हाथ हो सर पर तो मिल जाये उसे मंजिल,
तुम्हें गुरु हों यहाँ कुछ भी हमें भगवान है गुरुवर ॥

गुरु महिमा

करोड़ों मुख से गुरुवर के गुणों को गा नहीं सकता,
जहां गुरुदेव पहुँचे हैं वहाँ मैं जा नहीं सकता।
गुरु ने हाथ खुश हो दिल से सर पे रख दिया जिसके,
हजारों गर्दिशों में भी वो ठोकर खा नहीं सकता।।

गुरु हैं खुदा

गुरु के दर पे आकरके यहाँ हम सब महकते हैं,
गुरु के गीत गाकरके यहाँ सब चहकते हैं।
गुरु काबा, गुरु हज है गुरु चलता हुआ तीरथ,
गुरु को हम खुदा का रूप धरती पर समझते हैं।।

गुरु हैं चाँद

गुरु को हम यहाँ पूनम का खिलता चाँद कहते हैं,
गुरु को हम यहाँ भक्तों की अंतस् जान कहते हैं।
जो अपनी जान से ज्यादा गुरु को प्यार करता है,
उसी को हम यहाँ जीता हुआ इंसान कहते हैं।।

गुरु हैं भगवन्

गुरु को देखना दिल में तो दिल को साफ रखना तुम,
करो अर्पण हृदय उनको हमेशा साथ रखना तुम ।
न मंदिर में न मस्जिद में न है भगवान मूरत में,
गुरु भगवान का दर्पण समझकर याद करना तुम।।

गुरु हैं समयसार

गुरु मस्जिद गुरुमंदिर गुरु गुरुद्वार हैं यारो,
गुरु की गर इनायत हो तो गुरुवर प्यार हैं यारो।
गुरु ही हर कदम पर राह मंज़िल की दिखाते हैं,
गुरु जीते हुए जलते समय का सार हैं यारो ॥

कोई - कोई

“रुलाना जानते हैं सब हँसाता हैं कोई-कोई,
गिराना जानते हैं सब उठाता हैं कोई - कोई।
जो जैसा दिल में होता है वो करता काम वैसे ही
मिटाना जानते है सब बनाता हैं कोई - कोई”॥

मेरी आँखे

गुरु का दर्श करने को तरसती हैं मेरी आँखें,
चरण पक्षाल करने को बरसती हैं मेरी आँखें ।
गुमानी बनके गुरुवर की अगर गीबत[1] कोई करता,
तो शोला बनके उस पर ही गरजती हैं मेरी आँखें ।।

1 = निंदा

दूर थे हमसे

तरसते थे नयन मेरे - गुरु जब दूर थे हमसे,
उदासी थी हृदय मेरे - गुरु जब दूर थे हमसे ।
गुरु का दर्श ही दिल में उजालों की किरण लाता,
दिले तस्वीर रखता हूँ गुरु जब दूर थे हमसे ॥

गुरू विराग

जलाती है यहाँ सबको उसे हम आग कहते हैं,
भरा हो विष उठाये फन उसे हम नाग कहते हैं।
जहाँ चारित्र अनुशासन हो सम्यग्ज्ञान दर्शन धन
उसे श्रद्धा से हम सब ही 'गुरू विराग' कहते हैं।।

दुआएँ

मैं मर्जों की दवाओं को हमेशा साथ रखता हूँ,
मर्ज, बेमर्ज हो ऐसा यहाँ इलाज करता हूँ ।
कहीं हम रास्ते में बैठ जाएँ यूँ न थक करके,
दुआएँ अपने गुरुवर की हमेशा साथ रखता हूँ।।

भाग्य - दुर्भाग्य

मिले गर साधु के दर्शन हमारा भाग्य है यारो,
करें हम याद गुरुवर को तो ये सौभाग्य है यारो,
अहोभाग्य हमारा जब गुरु घर पर पधारे हों ।
याद गुरुवर हमें कर लें महासौभाग्य है यारो
कि इतना हो अगर फिर भी न हम सेवा भी कर पाये
तो समझो गम की दुनिया में मेरा दुर्भाग्य है यारो ।।

पटकता हूँ

धरम क्या चीज है गहराई से मैं सब समझता हूँ,
पढ़ाये कोई भी पट्टी मैं हरगिज न भटकता हूँ।
कोई आकर के कचरे छाप बातें सामने कह दे,
तो ऐसी बात को कचरे के डिब्बे में पटकता हूँ।।

निर्ग्रन्थ मत मानो

कि जिसमें पंथ होता है उसे निर्ग्रन्थ मत मानो,
भले ही भेष साधु का उसे तुम संत मत मानो ।
जो है मेंढक कुए का हंस वो कैसे नजर आये,
जहाँ पर पक्ष बैठा हो वहाँ भव अंत मत जानो ।।

इन्सान बन जाता

कभी नादान बन जाना कभी तूफान बन जाना,
कभी अरमान बनकर मज़हबी पहिचान बन जाना।
कि तुमसे देवता मिलने को आयेंगे जमी पर खुद,
बशर्ते नेक दिल सा तू यहाँ इन्सान बन जाना ॥

गुरु का इशारा

किसी को गम सहारा है किसी को रम सहारा है,
कोई गम का पिटारा है कहीं गम का नजारा है ।
न कश्ती डूबती उसकी यहाँ मिलता उसे साहिल,
कि जिस पर हाथ यारब का औ गुरुवर का इशारा है ।।

होते हम

कभी गुमनाम होते हम कभी बदनाम होते हम,
कभी शैतान होते हम कभी हैवान होते हम ।
समय सबको नचाता है समय सबको उठाता है,
कभी इंसान होते हम कभी भगवान होते हम ।।

दिलशाद

यहाँ आज़ाद बनने को सभी आज़ाद हैं यारो,
कोई इज़ाद करता है कोई बरबाद है यारो ।
सभी के पास बस अपनी नज़र के ही नज़ारे हैं,
कोई गम को लगा बैठा कोई दिलशाद है यारो ।।

स्वग - नर्क यहीं

न ऊपर स्वर्ग दिखता है न नीचे नर्क दिखता है,
ये पंडित और पुरोहित का हमें बस तर्क दिखता है।
नरक गम है स्वर्ग सुख है जमीं पर ही नज़र आता
समझने का हमें दिल में जरा सा फर्क दिखता है ।।

जुड़ जाये

पता क्या है कहाँ ? कैसे ? कौन किससे बिछुड़ जाये,
ये पंछी मन के पिंजरे से किधर किस वक्त उड़ जाये।
जरा सी ज़िंदगी का सार मिल जाये जिसे यारो,
पता क्या है खुदा खुद से यहाँ किस वक्त जुड़ जाये ।।

कमल का फूल

भले ही प्रश्न मुश्किल हो - सभी का हल निकलता है,
करो तुम काम कैसे भी यहाँ पर फल निकलता है ।
कि जिस कीचड़ में खरपतवार पानी में लगे काई,
उसी किचड़ में पलकरके कमल का फूल खिलता है ।।

छीन लेता है

खुशी से दे दिया जिसने खुशी से उसको देता है,
जिसे देने में गम होता उसे दुख देके देता है ।
नहीं देता यहाँ कुछ भी उसे कुछ भी नहीं मिलता,
जो देते को मना करता वो उसका छीन लेता है ।।

स्वर्ग पायेगा

बहुत पैनी निगाहों से जो खुद को देख पायेगा,
उसी का रास्ता यारो यहाँ जन्नत को जायेगा ।
न खोजो स्वर्ग तुम ऊपर न मंदिर में न मस्जिद में,
गुरु की संगतें करले वहीं पर स्वर्ग पायेगा ॥

इल्म की दौलत

मिलें दुनियाँ की दौलत तो वो इक पल का झरोखा है,
न हो गर इल्म[1] की दौलत तो सारी उम्र धोखा है ।
कोई बन बनके मिटता है कोई मिट मिटके बनता है,
खुला है रास्ता चुन लो यहाँ बनने का मौका है ।।

1 = आत्मा के गुण

निर्वाण

यहाँ इंसां के जीवन में सार सद्ज्ञान है यारो,
ज्ञान में सार सम्यक् है कहें भगवान ये यारो ।
बिना सद्ज्ञान - सम्यक के न सद् चारित्र होता है,
अगर चारित्र हो सम्यक् तो फिर निर्वाण है यारो ।।

खुश किश्मती गुल

किन्हीं फूलों से दुनियाँ में मधुर गुलकंद बनता है,
किन्हीं फूलों से कपड़ों का यहाँ पर रंग बनता है।
हजारों किस्म के फूलों का गुलशन में नज़ारा है,
मगर खुशकिश्मती गुल ही प्रभु चरणों में चढ़ता है॥

नया काम

कहें किससे मेरे घर में नई सी रोशनी लाओ,
चिराग अपना नई लौ से दिले दीपक जला जाओ।
हटा दो भूल को दिल से नये अरमान लेकर के,
नया जीवन नई रंगत नया हर काम कर जाओ॥

नहीं सकता

किसी को दर्द दे कोई ख़ुशी में जी नहीं सकता,
जहर दे करके अमृत को कोई भी पी नहीं सकता।
जो अमृत बाँटते हरदम उन्हें अमृत का प्याला है,
जो फाड़े ग़ैर के कपड़े वो अपने सी नहीं सकता॥

पसीना चाहिए

समंदर पार करने को सफीना चाहिए अपना,
खुदा को जानने सच का नगीना चाहिए अपना।
किन्ही गैरों के काँधे पर यहाँ मरघट पहुँचते हैं,
मगर मंजिल को पाना तो पसीना चाहिए अपना॥

जिंदगी

सफर है बेबसी का ये ज़िंदगी भार लगती है,
सकूं दिल को न मिलता है बड़ी बेकार लगती है।
सहज सी ज़िदगी आकर मखौल हमने बना डाली,
तभी तो ज़िंदगी गुल सी हमें बस खार लगती है॥

पार होता है

तहे दिल से खुदा को जो न माने भार ढोता है,
ये दुनियाँ में सभी पाकर करोड़ों बार रोता है।
भँवर के बीच फँसकर गुरु पर ही भरोसा है,
उसी बंदे का तूफां में सफीना पार होता है ॥

मेरी आँखे

अगर मेरे हृदय में प्रेम का संचार हो जाता,
तो दुनियाँ से यहाँ कबका मेरा उद्धार हो जाता।
गुरु के बिन भटकता ही रहा ठोकर कई खाई,
गुरु इक बार मिल जाते तो बेड़ा पार हो जाता॥

इंसान

उठाये जो हमें भव से उसे हम ध्यान कहते हैं,
तिराये जो समंदर में उसे हम ज्ञान कहते हैं।
गरीबों की करे सेवा जो गिरतों को उठाता है,
गैर का दर्द पीता जो उसे इंसान कहते हैं ॥

इंसान

हर इक दिल में छिपे देखो बहुत अरमान होते हैं,
सभी अरमान के पीछे बहुत तूफान होते है ं।
कुचलकर पाँव से तूफान को आगे जो बढ़ जाते,
वही धरती तले सच्चे यहाँ इंसान होते हैं ।।

उजड़ते हैं

जो करते है करम अहले - उन्हीं के कर्म कटते हैं,
जो करते हैं गुरु सेवा वही खुद को समझतें हैं ।
गुरु निंदा यहाँ करते उन्हीं के भव बिगड़ते हैं,
निकलता कोढ़ मिटता घर वे दुनियाँ में उजड़ते हैं ।।

लगाओ बाग

जलाना है तो हर दिल में नया दीपक जला जाओ,
दिखाना है तो भटके को नया रास्ता दिखा जाओ ।
दो ऐसा प्यार सबके दिल में दिल फूलों से खिल जायें,
लगाओ बाग हर घर में गले सबको लगा जाओ ॥

जीत जाते हैं

यहाँ दिन बीतते कब हैं हमीं खुद बीत जाते हैं,
घड़े पूरे भरे वो खुद यहाँ पर रीत जाते हैं ।
जो खुद के आईने में झांकना खुद सीख लेता है,
जनम छोड़ो यहाँ वे मौत तक को जीत जाते हैं ॥

श्मशान

जहाँ इंसानियत दिल में वहीं इंसान होता है,
झुके श्रद्धा से सिर अपना वहीं भगवान होता है ।
कि जिस घर में चरण मुनियों के पड़ते हैं नहीं यारो,
वो घर, घर है नहीं वह तो यहाँ श्मशान होता है ॥

आदत

तुम्हें रोनी ही रोना है हमें हँसने की आदत है,
अंधेरों से लगन तुमको हमें जलने की आदत है।
रहे घर में मगर मरते हुए गुज़रा यहाँ जीवन,
तुम्हें मरने की आदत है हमें जीने की आदत है॥

दिल में गीता

कोई सपने में जीता है कोई अपने में जीता है,
कोई मरने में जीता है कोई रमने में जीता है ।
किसी के दिल में हीरे हैं किसी दिल में है कालिख,
किसी का दिल ये रीता है किसी के दिल में गीता है ।।

गुरु हमदर्द हैं

गुरु के द्वय चरण में आज सिर अपना झुकायेंगे,
दिल श्रीफल बनाकरके समर्पण कर चढ़ायेंगे ।
किसी को जो बता सकता नहीं वो बात इस दिल की
गुरु हमदर्द हैं उनको सभी बातें बतायेंगे ॥

स्वयं जैसा

पुण्य भरना हमें कैसे ? पाप खोना बताते हैं,
खुद में हँसना सिखाते हैं - खुद पे रोना सिखाते है।
मणि पारस बनाता है यहाँ लोहे को सोने सा,
मगर गुरु भव्य शिष्यों को स्वयं जैसा बनाते हैं ॥

गुरु कुंभकार

यहाँ सूरज सा जल जलके मुझे जलना सिखाया है,
खुदा का रूप सुंदर सा हमें गुरु ने दिखाया है।
गुरु होते न धरती पर, तो मैं ऐसा नहीं होता,
कि गुरु ही कुंभकार हैं घड़ा मुझको बनाया है ॥

गुरु झंकार

गुरु झंकार अंतस् की दिले - संगीत देते हैं,
सही राही हैं मंज़िल पे चलन की रीति देते है ।
छुड़ाते घर-पिता-माता-बहिन-भाई-सभी बन्धु,
मगर उनसे भी बढ़कर के हमें वो प्रीति देते हैं ॥

गुरु शिल्पी

गुरु ने जीतकर मन को दिले जीकर दिखाया है,
हर इक शैतान को गुरु ने यहाँ इंसां बनाया है ।
मैं पत्थर दिल बना पत्थर कई ठोकर लगी मुझमें
तराशा टाँककर मुझको तो गुरु ने (मुनि) ये बनाया है ।।

सच्चा पथ

मेरे गुरुवर मेरे दिल में नया दीपक जला देना,
मुझे अपनी ही मंजिल का पता सच्चा बता देना।
कहीं रागी कहीं द्वेषी कहीं अज्ञानमय भेषी,
मुझे पथ वीतरागी का यहाँ सच्चा दिखा देना॥

खटकता है

हदों से भी गुजरकर गम मेरे दिल में भटकता है,
जुवां खामोश हो जाती ये आँखों से टपकता है ।
उदासी दिल में छायी है गमजदां दिखता है चेहरा,
दर्द सहकर मेरा हँसना जमाने को खटकता है।।

कौन कहता है

किराये का ये घर अपना घराना कौन कहता है ?
न हम गर हों जमाने में जमाना कौन कहता है ?
कहो महावीर अथवा राम सबमें है नयापन सा,
नये हरदम रहेंगे वो पुराना कौन कहता है ?

अश्क

किसी के अश्क दिल की बात खुद कहते नजर आते,
कहीं पर अश्क पैरों में नया खुद ही सफर लाते ।
कहीं पर अश्क कातिल बन मुझे अंधा बनाते हैं,
समझ ले अश्क तू दिल के यही दिल में सहर[1] लाते ।।

1 = सुबह

जलाने दो

किसी के आँख के आँसू हमें खुद ही सुखाने दो,
दिले गर घाव तो मरहम हमें खुद ही लगाने दो ।
चिरागों को जलाया है यहाँ तुमने बहुत से, पर
किसी बुझती शमां को अब हमें खुद ही जलाने दो ।।

आँखें

लबों पर लब्ज आये बिन सभी कुछ बोलती आँखें,
खुशी चेहरे पे या गम को यहाँ पर खोलती आँखें।
किसी का प्रेम आँखों में कहीं पारा चढ़ी आँखें,
कहीं अमृत बरसता है कहीं विष घोलती आँखें।।

चमन कर लें

चलो जिसमें सभी गुण हैं वही हम आचरण धर लें,
जिसे इज्जत से देखा हम सभी उसको नमन कर लें।
जहाँ रोने से किश्मत का चमकता एक हीरा तो,
वहीं रोकर के गंदला दिल स्वयं अपना चमन कर लें॥

दिल में

गुरु के गा सकूँ नग्मे नहीं वो साज है दिल में,
तरन्नुम साँस में नहि है नहीं अंदाज़ है दिल में ।
कोई भी शख्स गुरुवर के सभी गुण गा नहीं सकता,
न गाने की मुझे हिम्मत नहीं अल्फ़ाज हैं दिल में ॥

सन्यासी

रहे कीचड़ में कीड़े सा उसे संसारी कहते हैं,
कमल सा हो जो कीचड़ में उसे सन्यासी कहते हैं।
यहाँ जो भोगता भोजन उसे संसारी जानो तुम,
भुगतता है जो भोजन को उसे सन्यासी कहते हैं॥

कितना भी

चुनें अच्छा सदा रस्ता हो चाहे देर कितनी भी,
बुरा सोचें किसी का ना हो चाहे गैर कितना भी।
हो पत्नि प्रिय कितनी भी न बातें गुप्त बतलाना,
सलाह लेना तो भाई से हो चाहे बैर कितना भी॥

शाद करते हैं

खुदा की बंदगी करते, नहीं फरियाद करते हैं,
खुदा को हर समय दिल से यहाँ हम याद करते हैं।
नहीं सीखा कभी भी दिल यहाँ नाशाद कर जीना,
खुशी से हम ये अपना दिल हमेशा शाद करते हैं।।

अहसास

जो बुझदिल हैं दिले उनके कभी भी दम नहीं होता,
जो सच्चाई से वाकिफ उनको कोई गम नहीं होता।
गुरु हो सामने मेरे या हो नहि सामने मेरे,
दिले अहसास गुरुवर का भी कोई कम नहीं होता॥

यादकर देखो

कभी तुम भूलकर खुद को, खुदा को याद कर देखो,
सभी गम छोड़कर दिल को जरा सा शाद कर देखो।
ये दुनियाँ स्वर्ग इंसाँ देवता आयें नजर तुमको,
यहाँ इंसानियत का धर्म तुम ईजाद कर देखो ॥

कमी

है माना हमने ये गुरुवर मेरी दुनियाँ महकती है ,
ये कोयल सी मेरे घर में हमेशा ही चहकती है ।
हमारे पास सबकुछ है मगर फिर भी मेरे गुरुवर!
मेरे दिल में कमी तेरी हमेशा ही खटकती है ॥

गीत गाता हूँ

मैं तन्हा में अगर होता तो गुरुवर को बुलाता हूँ,
दिले खुद जानकर खुद मैं स्वयं ही डूब जाता हूँ।
गमे रहता नहीं इक पल न गम का जिक्र करता हूँ,
हमेशा खिलखिलाने को खुदा के गीत गाता हूँ।

आँखों लगाया है

गुरु ने आ मेरे दिल का अँधेरा सब मिटाया है,
मुझे सच ज्ञान देकर के नया दीपक जलाया है।
मैं अंधा था मुझे कुछ भी नजर आता न था यारो,
गुरु ने ज्ञान का सुरमा मेरी आँखों लगाया है।।

धर्म मिट जाता

गुरु होते नहीं जग में तो जग सारा ही जल जाता,
समंदर सूख जाता और यहाँ आकाश फट जाता।
ये सारे आदमी अपना धरम खो बैठते आकर,
यहाँ इंसान में इंसानियत का धर्म मिट जाता ॥

जमाना है

ये दुनियाँ गम का मंजर है हमेशा मुस्कुराना है,
नये अनुभव करो हरदम - किये वो सब पुराना है।
यहीं पर ज़िंदगी का अंत तुम समझो नहीं आकर,
ज़माना ये मगर इससे भी आगे इक ज़माना है ।।

एक धंधा

जिन्हें खुद से मुहब्बत है वही यारब का बंदा है,
तहे दिल से इबादत को न करता है वो अंधा है।
करे सज्दा झुकाए सिर मगर दौलत मकां चाहे,
उसे रब की अबादत भी यहाँ पर एक धंधा है।।

सब दिखा जाये

खुदा को याद कर ऐसे तेरे दिल में समा जाए,
तू खुद में डूब जा इतना खुदा खुद में हि आ जाए।
न रख रोजा, न कर सज्दा, न काबा में पटक सर ये,
तहे दिल से उसे देखो वो सब दिल में दिखा जाये ।।

ख्वाहिश

जिन्हें जलने की ख्वाहिश हो, जलें वो दीप से आकर,
जिन्हें खुद में सँवरना हो वो जाने खुद खुदा जाकर।
जिन्हें जलना, सँवरना और खुद का ज्ञान पाना हो,
ये तीनों दे सकें गुरु ही झुको उनके चरण जाकर ॥

नहीं चलते

भटकते हैं वही प्राणी - नहीं जो दीप सा जलते ,
कभी जीवन के साँचे में - समझकर के नहीं ढलते ।
नहीं गंतव्य है मालुम मगर चलते चले जाते,
वो चलते हैं बहुत लेकिन - कदम इक भी नहीं चलते ॥

नई तस्वीर

तहे दिल से खुदा देखें तो खुद अक्सीर बदलेगी,
इसी अक्सीर से तेरी यहाँ तकदीर बदलेगी ।
भले ही आज तू न बन सके इंसान धरती पर
मगर इक दिन तेरे दिल से नई तस्वीर निकलेगी ।।

ज़िंदगी की शाम

हमारे पास जो भी हो वो सब नीलाम हो जाये,
ज़रा सी ज़िंदगी मेरी खुदा के नाम हो जाये ।
खुदा की याद हो दिल में उसी का नाम हो लब पे,
न जाने किस गली में ज़िंदगी की शाम हो जाये ।।

गले मिलते

जो हँसकर के गले मिलते वो दिल से साफ़ होते हैं,
नहीं मिलते गले उनके दिलों में पाप होते है ।
करें यारब की जो सज्दा उन्हें मिलती जहाँ दौलत,
सभी के घाव धोता जो वहीं प्रभु आप होते हैं ।।

समझते हैं

प्रमादी हैं वो पूजन को हमेशा गम समझते हैं,
गुमानी है वो गुरुओं को स्वयं से कम समझते हैं।
जो शास्त्रों को बहुत पढ़ते नहीं झुकते हैं गुरुओं को,
हकीकत में जहाँ वाले उन्हें उल्लू समझते हैं ॥

हक

जो दे सकते नहीं हैं हम उसे हक है न लेने का,
जो दिल से हम नहीं चाहें उसे हक है न देने का।
किसी की रूह में अंतर न फरमाया यहाँ रब ने,
जो तुम सबसे यहाँ चाहो रखो वह भाव देने का॥

दान - सम्मान

जिन्हें जीवन बनाना है वो पूजन दान करते हैं,
गँवाना है जिन्हें जीवन वो कोरा मान करते हैं ।
वही सम्मान के काबिल वही हकदार दौलत के,
जो गुरुओं का तहेदिल से यहाँ सम्मान करते हैं ॥

प्राण

जिलाने में न प्राणों को किसी को दे सकेगें हम,
जरा सी उम्र गैरों को कभी न दे सकेंगे हम ।
तभी महावीर ने बोला जिओ और सबको जीने दो,
नहीं प्राणों को दे सकते तो कैसे ले सकेंगे हम ।।

जमाने में

हजारों जख्म हैं दिल में हजारों गम जमाने में,
करोड़ो रोग हैं फिर भी बहुत खुश हैं जमाने में।
उजालों की शमां दिल में नज़र आयेगी देखो तो,
खुदा को तू नज़र भर के, दिखेगा सब जमाने में।

दीदार

जहाँ भी देखता हूँ बस तेरा दीदार होता है,
मेरे यारब तेरे सज़्दे में खुद से प्यार होता है।
तेरे नक्शे कदम पर हमने भी चलने की ठानी है,
चलें नक्शे कदम पर जो जहां से पार होता है।।

समझकर

समझ करके न करता जो उसे कुछ भी नहीं मिलता,
अंधेरों के करम करके किसी का दिल नहीं खिलता।
रखो इंसानियत दिल में बुरा सोचो न गैरों का,
दगा करके किसी को भी यहाँ पर स्वर्ग नहिं मिलता॥

दीप

गुरु के द्वय चरण में दीप जलता सा नज़र आया,
ज़रा सी ज़िंदगी को आसरा पलता नज़र आया।
मुरादें खुद हुई पूरीं नज़र आया सफ़ा रस्ता,
इबादत से हमें जीवन यहाँ फ़लता नज़र आया॥

सरलता

कहीं मिलती विफ़लता है कहीं पर इक सफ़लता है,
कहीं यह दीप जलता है कहीं जलने मचलता है ।
कुटिलता है दिल ए उसको खुशी मिलती नहीं कोई,
खुशी रहती उसी के घर जहाँ दिल में सरलता है ॥

भरोसा क्या ?

उलझ मत दिल सहारों में सहारों का भरोसा क्या?
न धन दौलत बहारों में बहारों का भरोसा क्या ?
अगर विश्वास करना है तो कर दुनियाँ के मालिक पर,
वही दुनियाँ बनाता है ये दुनियाँ का भरोसा क्या ?

कौन आकरके

अगर जीता नहीं कोई तो मरता कौन आकरके,
खुशी दुनियाँ में गर होती तो तिरता कौन आकरके।
उसे मंजिल मिली जिसने खिलाया खुद को काँटों में,
अगर मंजिल हो काँटों बिन, गुज़रता कौन आकरके॥

वंश

जिसे हम ढूँढने निकले वो अपने पास ही निकला,
कि जिसकी चाह में भटके वो घर का पासवां निकला।
खुदा की रूह से हम दूर कबसे मानते आये,
मिलाया खून का रिश्ता तो अपने वंश का निकला॥

दुनियाँ

हैं अंजाने यहाँ जिससे वही दुनियाँ हमारी है,
नहीं पहुँचे हैं अब तक हम वही दुनियाँ हमारी है।
कहीं जन्नत कहीं दोज़ख में बदले हैं लिबासों को,
लिबासों को जहाँ छोड़ा वही दुनियाँ हमारी है ॥

ज़माना

नहीं ज़मना ज़माने में ज़माने में ज़माना है,
ज़माना है नहीं दिल में तो दिल तेरा ख़ज़ाना है।
ज़माने को लगा ठोकर मिले हर शै ज़माने की,
जिया ठोकर लगाकर जो उसी का ये ज़माना है।।

ईश्वर

बिना ईश्वर को जाने तुम उसे क्या जान पाओगे ?
उसे दिल में नहीं माना मुझे क्या मान पाओगे ?
कोई चलता हुआ ईश्वर कोई बैठा हुआ ईश्वर,
न बैठे को समझ पाये - क्यों चलता मान पाओगे ?

सर उठाकर

अगर ऊँचाई पाना है जिओ तो सर उठाकरके,
दिल ए गहराई पाना है तो जी अनुभव में जाकरके।
ये दिल गहरा समंदर है यहाँ हर चीज मिलती है,
खुदा मिल जायेगा गर तुम रहो नज़रें मिलाकरके॥

ज़माने में

हज़ारों ज़ख्म है दिल में हज़ारों ग़म ज़मानें में,
हज़ारों रोग हैं फिर भी बहुत खुश हैं ज़माने में।
उजालों की शमां दिल में नज़र आयेगी देखो तो,
मिलेगी रोशनी ऐसी दिखेगा सब ज़माने में ॥

बंध - निर्बन्ध

यहाँ नहिं राग होगा गर तो होगा बंध भी कैसे ?
नहीं गर वीतरागी हो तो हो निर्बन्ध भी कैसे ?
कवि का भाव है कविता वही अनुभव है जीवन का,
जहाँ अनुभव पराया है वहाँ आनन्द भी कैसे ?

पंथ - निर्ग्रन्थ

कि जिसमें पंथ होता है उसे निर्ग्रन्थ मत मानो,
ये होता है गृहस्थों में उसे तुम संत मत मानो ।
न जिनवाणी में पंथों की कोई चर्चा नज़र आती,
कि जिसमें पंथ का विष हो उसे तुम ग्रन्थ मत मानो ।।

ईश्वर

जमानें में नज़र आये हमें इंसान में ईश्वर,
है ईश्वर में यहाँ इंसां या है इंसान में ईश्वर ।
ये कृति ईश्वर की इंसां है या इंसां की कृति ईश्वर,
हमें इसका नहीं मालूम ये सब जाने यहाँ ईश्वर ॥

मिल सका यारो

किसी को दुक्ख देकरके किसे सुख मिल सका यारो,
जहर देकर यहाँ अमृत किसे कब मिल सका है यारो।
जो दोगे तुम वही तुमको मिलेगा है अटल ये ही,
यहाँ पर नीम के तरु में आम कब मिल सका यारो ॥

देखी

यहाँ तुम सबने मिलकर के हमारी नम्रता देखी,
तुम्हारे साथ रह करके तुम्हारी धृष्टता देखी ।
कि जिसपे जो हुआ उसने उसे सबको दिखाया है,
किसी की उच्चता देखी किसी की नीचता देखी ।।

उसी का है

सभी आलम के सहले गम, यहाँ सीना उसी का है,
हमारा आपका जीना नहीं, जीना उसी का है ।
भरे हों जख्म दिल में पर पिये आँखों से अश्कों को,
निकलने दे नहीं आँसू यहाँ पीना उसी का है ॥

सामायिक

मूल पूँजी है आतम की हमारी एक सामायिक,
मैल सब दूर करती है हमारी एक सामायिक ।
मोक्ष मंज़िल पे जाने की है सुंदर लिफ्ट सामायिक,
सही श्रद्धा बनाती है हमारी एक सामायिक ।।

क्या कीमत ?

बिना मज़हब के मानव की ज़माने में है क्या कीमत ?
बिना कौड़ी के श्रावक की ज़माने में है क्या कीमत ?
है जीवन में यहाँ संयम नियम भगवान की भक्ति
नहीं ये जिसके जीवन में है उसकी क्या यहाँ कीमत ?

जलना

किसी की आग में ज़लना नहीं हमसे गँवारा है,
स्वयं के दीप से जलना हमें सबसे ही प्यारा है।
जो गैरों के भरोसे पर चलें वे डूब जाते हैं,
स्वयं के हाथ से तिरते उन्हें मिलता किनारा है।।

हमारा है

जो हैं असहाय दुनियाँ में उसे सबका सहारा है ,
नहीं कोई यहाँ जिसका वो सबका ही दुलारा है ।
कोई मुनि जब निकलते तो उन्हें सब देखने आते,
सभी कहने यही लगते ये मुनिवर तो हमारा है ॥

मुनि श्री द्वारा रचित एवं संकलित साहित्य की तालिका

1. तन्मयता की बेला – (पूजन शिविर) मूल्य 20 रु. 192 पेज
आज की नवीन पीढ़ी के लिए विधिपूर्वक आगमानुसार भगवान की पूजन करने का सही ढंग, जिसमें भक्तामर स्तोत्र, स्वप्न फल, सूतक पातक एवं नये ढंग से मधुरमय अर्घावली
2. भक्तामर स्तोत्र – (भक्तामर शिविर) मूल्य 25 रु. 224 पेज
शुद्ध भक्तामर स्तोत्र को सही ढंग से तोड़कर लिखा गया है जिसमें नई धुन पर सात तरह का पद्यानुवाद है, ऋद्धि मंत्र व फल विवेचन भी है।
3. दैनिक कर्तव्य – मूल्य 30 रु. 320 पेज
श्रावक के करने योग्य सभी स्तोत्र, तत्वार्थ सूत्र सामायिक पाठादि, द्रव्य संग्रह, इष्टोपदेश आदि चौघडिया, सूतक पातक
4. भक्ति की छलक मूल्य 10 रु. 96 पेज
90 नवीन भजन आचार्य श्री द्वारा रचित
5. समंदर की लहरें – मूल्य 10 रु. 96 पेज
लगभग 90 भजन आचार्य श्री द्वारा रचित
6. अंतस् का पराग – मूल्य 10 रु. 96 पेज
लगभग 90 भजन आचार्य श्री द्वारा रचित
7. आस्था के स्वर मूल्य 10 रु. 96 पेज
लगभग 90 भजन आचार्यश्री द्वारा रचित
8. जिनसहस्र नाम स्तोत्र मूल्य 15 रु. 80 पेज
9. **Philosophy of Karma** – कर्म विज्ञान – मूल्य 15 रु.
कर्मो का विवेचन प्रश्नोत्तर में – आचार्य श्री द्वारा अंग्रेजी में अनुवाद

10. बोलती कविताएँ – मूल्य 100 रु. 160 पेज
आचार्य श्री द्वारा लगभग 200 स्व रचित कविताएँ साहित्यिक – धार्मिक एवं व्यंगात्मक
11. जमाने का सच– मूल्य 30 रु. 120 पेज
आचार्य द्वारा नये नये चिंतनों का अनूठा संकलन एवं मुनि श्री के दीक्षा चित्र व उनके विशेष अनुभव
12. हकीकत का पैगाम – मूल्य 30 रु. 120 पेज
आचार्य श्री द्वारा मंथन का निचोड़ व तर्क के आधार पर नये – नये अनूठे विचारों का संगम
13. ज़िंदगी क्या है? – मूल्य 15 रु.
आचार्य श्री का रंगीन चित्र एवं ज़िंदगी के बारे में महत्वपूर्ण तीन प्रवचनों का संकलन
14. सच क्या है? – मूल्य 15 रु.
तेरा पंथ–बीस पंथ और विशाल सच का स्वरूप, मूढ व मूर्ख में, भूले व भोले में अंतर – सच्चा धर्म और झूठा पंथ का अहंकार क्या है?
15. ख़ज़ाने के मोती – मूल्य 30 रु. 105 पेज
आचार्य श्री द्वारा रचित उर्दू में गज़लें लगभग 102 सभी तर्जों में रचित, शेर व मुक्तक
16. तासीर के मंज़र – मूल्य 30 रु. 105 पेज
आचार्य श्री द्वारा रचित उर्दू में गज़लें लगभग 102 सभी तर्जों में रचित, शेर व मुक्तक
17. What is Life – मूल्य 20 रु.
आचार्य श्री द्वारा प्रवचन की पुस्तक का अंग्रेजी में अनुवाद (प्रेस में)
18. What is truth – मूल्य 25 रु.
आचार्य श्री द्वारा लिखित पुस्तक का अंग्रेजी में अनुवाद (प्रेस में)

19. जानिये सम्यक् दीपावली – मूल्य 10 रु.
सही तरीके से दीपावली मनाने की विधि
20. Moral Science for Children मूल्य 50 रु.
Part I,II,III मुनि श्री द्वारा English Translation
21. English Quatation मूल्य 25 रु.
मुनि श्री द्वारा English में रचित सूक्तियाँ (धार्मिक एवं व्यावहारिक) (प्रेस में)
22 – सामायिक पाठ –
संस्कृत/हिंदी पद्यानुवाद व प्रतिक्रमण मूल्य 15 रु.
23. गा लो गुरु गुणगान –
मुनि श्री द्वारा गुरूदेव के ऊपर लिखित 4 पूजन व भजन मूल्य 5 रु.
24. अपना भविष्य जानो (Know your Future)
मुनि श्री द्वारा लिखित हिन्दी व म्दहसपी में मूल्य 15 रु. व 25 रू.
25. ऐसा क्यों ?
युवा पीढ़ी की नई शंकाओं के तर्क सहित अनूठे और सटीक उत्तर मूल्य 15 रु.
26. अनुभूतियों के भँवर
ग़ज़ल की तर्ज पर 100 कविताओं के मार्मिक छनद मूल्य 15 रू 112 पेज
27. ग़ज़ब की लाइनें
गीतमय छन्द पर 100 कविताऐं मूल्य 15 रू 112 पेज
28. असरदार लाइनें
दिल पर सीधा असर देते 100 कविताओं के छन्द मूल्य 15 रू 112 पेज
29. गुनगुनाता संदेश

जिन 100 कविताओं में गहरा उपदेश भी छिपा है और वह भी गीतमय है मूल्य 15 रू 112 पेज
30. जब मिल जाये रे .....
आचार्य श्री के गुरु भक्ति के ऊपर विशेष प्रवचन (काव्य युक्त) मूल्य 15 रू 54 पेज
31. कल्याण मन्दिर स्तोत्र
कल्याण मन्दिर स्तोत्र के शिविर हेतु शुद्ध सम्पादन में प्रेषित एवं पद्यानुवाद मूल्य 15 रू 112 पेज
32. होनी अनहोनी
जीवन है पानी की बूँद, जीवन जलता दिया यहाँ, गुरुवर का आशीष हमें, मूल्य 25 रू 192 पेज
जीवन चलती सांस यहाँ, अंग्रेजी में भजन व सूक्तियाँ
33. स्वर्ग नरक
स्वर्ग–नरक क्या है विशेष प्रवचन मूल्य 15 रू
34. विराग सुमन (प्रेस में)
35. विराग वन्दना (प्रेस में)
36. सच्चे ज्ञान की पहिचान (प्रेस में)

प्राप्ति स्थान

सम्यग्ज्ञान विराग विद्यापीठ भिण्ड	**श्री देवेन्द्र जैन** बड़ी बजरिया, बीना (सागर) – 07580–223344	**सीपुर समता तीर्थ धाम** सीपुर 9828613614